EDU Journal of International Affairs and Research (EJIAR), ISSN: 2583-9993
Volume 2, Issue 4, October-December, 2023, Available at: https://edupublications.com/index.php/ejiar

भारतीयता का सूत्र-एकता

डॉ. सचिन रस्तोगी

असिस्टेंट प्रोफेसर- राजनीति विज्ञान विभाग, एम. बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वानी उत्तराखण्ड

अगली शताब्दी की संभावनाऐं अद्भुत, अनुपम और अभूतपूर्व है। भारत में वैज्ञानिक, बौद्धिक और औद्योगिक प्रगति के साथ-साथ ही उदार चेतना का अवमूल्यन भी इन्ही दिनों हुआ है। जिनके कारण प्रगति के नाम पर जो कुछ हस्तगत हुआ है, उसका दुरूप्रयोग होने पर परिणाम उल्टे रूप में ही सामने आये हैं। सुविधा साधन अवश्य बढे हैं, पर उलझे मानस ने न केवल व्यक्तित्व का स्तर गिराया है वरन साधनों को इस बुरी तरह प्रयुक्त किया है कि पिछले पूर्वजों की सामान्य स्थिति की तुलना में हम कहीं अधिक समस्याओं में उलझे और विपत्तियों में घिर गये हैं। दलदल में फँस जाने जैसी स्थिति अवश्य है, पर ऐसा नहीं हो सकता कि देवत्व से एक सीढ़ी नीचे ही समझा जाने वाला मनुष्य असहाय बनकर अपना सर्वनाश ही देखता रहे, समय आते रहते न चेते।

मानस बदलने से प्रचलन गडबड़ाते हैं और व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है। बिखराव और विषमता दो बड़े संकट हैं, जो असंख्यों प्रकार के संकटों का जन्म देते हैं। इन्हें निरस्त करने के लिए एकता के संकटों को जन्म देते हैं। इन्हें निरस्त करने के लिए एकता और समता की सर्वतोमुखी प्रतिष्ठा करनी पड़ती है। इतना बन पड़ने पर वे सभी अवरोध अनायास ही समाप्त हो जाते हैं, जो तिल से ताड़ बनकर राई का पर्वत बनकर महाविनाश को चुनौती देते हुऐ गर्जन-तर्जन कर रहे हैं। नवयुग में एकता और समता के दोनों सिद्धान्त हर व्यक्ति की इच्दा या अनिच्छा से अंगीकार करने पड़ते हैं, ऐसा मनीषियों, भविष्यदृष्टाओं का अभिमत है। शासन और समाज को भी अपनी मान्यताऐं व्यवस्थाऐं इसी प्रकार की बनानी पड़ेगी। प्रथा और प्रचलन के अनुरूप अपने स्वभाव में परिवर्तन आवश्यक रूप से करने पड़ेंगे। अड़ंगे बाजी तो भली बुरी व्यवस्था में अपनी उद्दण्डता का परिचय देने के लिए कहीं न कहीं से आ टपकती है।

जलती दीपक की लौ बुझाने के लिए तपंगों के दल उस पर टूटने से बाज नहीं आते, भले ही इस दुराभी संधि में उन्हें अपने पंख जलाने और प्राण गवाने पड़े। तूफान का मार्ग रोकने वाले वृक्षों को उखड़ते और झोपड़ों का आसमान में उड़ते हुऐ आये दिन देखा जाता है। महाकाल के निर्धारण एवं अनुशासन के सामने को उद्दण्डता अवरोध बनके अड़ेगी, और व्यधान बनकर कारगर रोकथाम करेगी, इसकी आशंका न की जाये तो ठीक है।

भारत की इक्कीसवी शदी को सम्पूर्ण व्यवस्था एकता और समता के सिद्वान्तों पर निर्धारित होगी। हर क्षेत्र में हर प्रसंग में इन्हीं का बोलबाला दृष्टि गोचर होगा। इस भवितव्यता के अनुरूप हम अभी से धीमी-धीमी तैयारियां शुरू कर दे तो यह अपने हित में होगा। बह्म मुहूर्त में जाकर नित्य कर्म से निबट लेने वाले व्यक्ति सूर्य उदय होते ही क्रिया कलापों में जुट जाते हैं, जब्कि दिन चढ़े तक सोते रहने वाले कितने ही काम में पिछड़ जाते है।

मूर्धन्य मनिषियों का कहना है कि अगले दिनों एकता एक सर्वमान्य व्यवस्था होगी। सभी लोग मिल जुलकर रहने को विवश होंगे। सभ्यता के बढ़ते चरणों में ही एकता सबकी आराध्य होगी। संकीर्ण स्वार्थ-परता और अपने मतलब से मतलब रखने वाली क्षुद्धता किसी भी क्षेत्र में व्यावहारिक नहीं होगी। मिलजुलकर रहने पर ही शान्ति, सुविधा और प्रगति की दिशा में बढ़ा जा सकेगा। वसुधैव कुटुवम्बकम का आदर्श अब समाज बाद, समूह बाद, संधटन, एकीकरण का विधान बनकर समय के अनुरूप कार्यान्वित होगा। इससे सभी प्रियजनों का समान समर्थन मिलेगा।

अगली दुनियां एकता का लक्ष स्वीकारने के लिए निश्चय कर चुकी है। अड़ंगे बाजी से निपटना ही शेष है, वे प्रवाह में बहने वाले पत्तों की तरह लहरों पर उछलते कूदते कहीं से कहीं जा पहुँचेंगे। एकता अब अपरिहार्य होकर रहेगी। जाति पाति के नाम पर रंग, वर्ण और लिंग के आधर पर अलग-अलग कबीले बनाकर रहना आदिम काल में ही सम्भव था, आपके औचित्य को समर्थन वाले युग नहीं।

संसार भर में एक ही जाति का अस्तित्व रहेगा, और वह सुसंस्कृत, सभ्य मनुष्य जाति का काले, पीले, सफेद एवं गेरूवा आदि रंगों की चमड़ी होने से किसी को अलग विरादरी बनाये रह सकना अब सम्भव न होगा। समझदारी के महौल में मात्र न्याय ही जीवित रहेगा। औचित्य ही सराहा और अपनाया जायेगा, तूती उसी की बोलेगी।

भारत में धर्म सम्प्रदायों के नाम पर, भाषा,जाति प्रथा, क्षेत्र आदि के नाम पर जो कृत्रिम विभेद की दीवारें बन गयी हैं वे लहरों की तरह अपना-अपना अलग-अलग प्रदर्शन भले ही करती रहें, पर वे सभी एक ही जलाशय की सामाजिक हलचल भर मानी जायेगी। पानी में उठने वाले बबूले थोड़ी देर उछलने,मचलने का कौतूहल दिखाते हैं, इसके बाद त्वरित उनका अर्थात जलराशि में विलय, समापन हो जाता है। मनुष्य को अलगाव और बिखराव में बहने वाले प्रचलन इन दिनों कितने ही पुरातन, शास्त्र सम्मत अथवा संकीर्णता पर आधारित होने के कारण कितने ही प्रबल प्रतीत क्यों भले ही एक न हों, पर अगले ही दिनों सुनिश्चित रूप से एक बनकर रहेंगी। धरातल एक देश बनकर रहेगा।

देशों की कृत्रिम दीवारें खींचकर उसके टुकड़े बने रहना न तो व्यवहारिक, न सुविध जनक रहेगा। इसके रहते शोषण, आक्रामकता, आपा धापी का माहौल बना रहेगा। देश भक्ति के नाम पर मुह छिड़ते रहेंगे और समर्थ दुर्वलों को पीसते रहेंगे वहां यह सुविधा नहीं कि अपनी अनुकूलता वाले किसी भी क्षेत्र में बच सकें।

भगवान ने धरती को अपने सभी पुत्रों के लिये समाज सुविधा देने के लिए सृजा है। प्राकृतिक संपदा पर सभी का समान हक है अधिकार को अपनी पिटरी में भर कर शेष को दाने-दाने के लिये तरसावें, यह विभाजन अन्यायपूर्ण होने के कारण देर तक टिकेगा नहीं। आज की दादागिरी आगे भी इसी प्रकार अपनी लाठी बजाती रहेगी यह हो नहीं सकेगा।

धर्म सम्प्रदायों को विभाजन रेखा भी ऐसी है जो अपनी मान्यताओं को सच और दूसरों के प्रतिपादन को झूठा सिद्ध करने में अपने बुद्धि वैभव से शास्त्रार्थी, टकरावों के पड़ने पर उभरती रही है। अस्त्र-शस्त्र वाले युद्धों ने कितना विनास किया है, उसका प्रत्यक्ष होने के नाते लेखा-जोखा लिया जा सकता है, पर अपनी धर्म मान्यता दूसरों पर थोपने के लिये कितना दबाव और कितना प्रलोभन, कितना पक्षपात और कितना अन्याय इन कामों लगाया गया है, इसकी परोक्ष विवेचना किया जाना संभव हो तो प्रतीत होगा कि इस क्षेत्र के आक्रमण भी कम दुःखदायी नहीं रहे है। अनेकता में एकता में खोज निकालने वाली दूर दर्शिता को सम्प्रदायवार के क्षेत्र में प्रवेश करना चाहिए।

भारतीय मान्यताओं और परम्पराओं में से तर्क, तथ्य, प्रमाण, निरीक्षण एवं अनुभव की कसौटियों पर कसने के उपरान्त ही विश्व धर्म की बात आज भले ही सघनता में कठिन मालूम पड़ती हो, पर व समय दूर नही जब एकता का सूर्य उगेगा और इस समय जो अदृष्य है, असम्भव प्रतीत होता है, वह उस बेला में प्रत्यक्ष एवं प्रकाश वान हाता रहेगा। यही है आगे आने वाली सतयुगी व्यवस्था की कुछ झलकियाँ जो हर अस्तित्व को भविष्य के प्रति आशा वान बनाती है।

REFERENCES

[1]. Indian Diplomacy through Ages, Ambassador (Retd) Mahesh Kumar Sachdev, Distinguished Lectures. Ministry of External Affairs.
[2]. India's Foreign Policy- Determinants, Issues and Challenges, Amb(Retd) Rajiv Sikri, Distinguished Lectures, Ministry of External Affairs.
[3]. India's Foreign Policy: 2014-19 Landmarks, achievements and challenges ahead, Amb (Retd) Achal Malhotra, Distinguished Lectures, Ministry of External Affairs,
[4]. A Historuy of Ancient and Early Medieval India: From Stone Age to the 12thCentury, Upinder Singh.
[5]. Indian Kanoon Website
[6]. The Gazette of India
[7]. Arthashastra, Kautilya
[8]. https;//www. indianculture.gov.in/ebooks/nanaphadnis-and-external-affairs-maratha-empire.
[9]. Nehru's Himalayan UN gaffe: File on permanent UNSC membership offer to India must be traced and declassified, DP Srivastava, Former Indian Ambassador to Iran TOI
[10]. Ancient India, R.C. Majumdar.
[11]. A History of South India: From Prehistoric Times to the Fall of Vijayanagar, K.A. Nilakanta Sastri.
[12]. National Archives of India
[13]. Foreign Relations of Delhi Sultanate: Abstract Thesis Submitted For The Degree of Doctor of Philosophy in History, RoohiAbida Ahmed
[14]. https://niru453.wordpress.com

[15]. https:www.indiandiplomacy.org/2021/05/02indian-diplomacy-through-ages
[16]. htts://iasscore.in/currentaffairs/mains/Indian-foreign-policy-and-its-aspirations-institutional-design-matters.
[17]. https://www.civilsdaily.com/yojana-archive-ifsthe-continuing-salience/
[18]. https://theprint.in/opinion/for-mea-to-have-a-successful-restructuring-get-the-institutional-design-right/568678/
[19]. https://en-academic.com/dic.nsf/enwiki/2112792
[20]. http://manishkumarias.blogespot.com/2010/10/background-ifs-orgin-of- indian.html
[21]. vedapurana.org
[22]. http;//seshatdatabank.info/browser/AfKushn